कोविड–19 और जल संकट

निशा रानी धनवार*

सारांश – जल संकट एक स्वास्थ्य संकट है। कोरोना वायरस से बचने के कारगर उपाय 20 सेकेण्ड हाथ धो कर वायरस को मारने की सलाह दी गई है। इसका अर्थ होगा हर बार हाथ धोने पर लगभग 1.5–2 लीटर पानी खर्च करना जो लगभग प्रति व्यक्ति 15–20 लीटर पानी खर्च। वर्त्तमान में भारत समेत समस्त दुनिया में चुर्नाती यह है कि अत्याधिक लोगों के पास पानी की पहुँच नहीं है। ऐसे में जीवन का रक्षण काफी गंभीर चुनौती है। प्रस्तुत शोध–पत्र कोविड–19 से बचने के साथ–साथ जल संकट के प्रति सचेत करने में महत्वपूर्ण होगा।

शब्द कुंजी – स्वास्थ्य, जल संकट, चुनौती, कोविड–19, जीवन।

मानवीय भूलों का ही परिणाम है आज धरती पर जल–संकट पैदा हो गया है। लगातार बढ़ता प्रदूषण और जल के संचय का अभाव इसके मुख्य कारण हैं। 11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड–19 को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया था। कोरोना वायरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह है, जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। इस वक्त हम कोरोना महामारी का सामना कर रहे हैं और पानी की उपलब्धता ही इस बात का निर्धारण करेगी कि हम इस लड़ाई को जीत पाते हैं या नहीं।

मौजूदा समय में, भारत सहित दुनिया भर में कोरोना वायरस यानी कोविड–19 का कहर बरपा हुआ है। इस महामारी से बचने का सबसे आसान तरीका उच्च स्तर की साफ–सफाई रखना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सलाह दी है कि हाथ धोने का आर्दश समय 20 सेकेण्ड का है और दिन में कई बार हाथ धुले जाने चाहिए। अब ये बेहद आवश्यक है। कोरोना महामारी के इस दौर में लोग हाथ मिलाने से परहेज कर रहे हैं लेकिन कुछ–न–कुछ छूने से तो नहीं बचा जा सकता है। ऐसे में कोरोना महामारी से बचने के लिए साबुन और पानी पर निर्भर रहना पड़ रहा है। जल संरक्षण की जरूरत पर एक उचित संदेश के अभाव में लोग नलों को लंबे समय तक खुला छोड़ सकते हैं।[1]

जल की महत्ता सर्वविदित है यदि कहा जाए कि जल जीवन का आधार है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पेयजल, दैनिक कार्यों कृषि कार्यों, भवन निर्माण, ऊर्जा उत्पादन इत्यादि क्षेत्रों में जल की सर्वाधिक आवश्यकता होती है।[2]

***शोध–छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची**

सीधे शब्दों में कहें तो जल संरक्षण पानी के गंभीरतापूर्ण उपयोग करने और इसके अपव्यय को कम करने की प्रथा है। चूँकि स्वच्छ जल को अब एक सीमित संसाधन माना जाता है इस कारण जल संरक्षण अनिवार्य हो गया है।

जब से कोरोना का प्रकोप पूरे विश्व में फैला है, लोगों को दिन में कई बार हाथ धोने और घर वापस आते ही नहाने की सलाह दी जा रही है कोरोना से बचने का यह एक बहुत ही बेहतरीन तरीका हो सकता है लेकिन इसके साथ ही हम एक चीज भूल रहे हैं कि पूरी दुनिया पेयजल संकट से भी जूझ रही है।

ऐसे हालात में लोगों को इस ओर ध्यान देना जरूरी है कि हमारा देश भीषण जलसंकट से जूझ रहा है। 189 देशों में भारत 13वें पायदान पर खड़ा है और और 'डे–जीरो' की कगार पर 17 देश हैं।[3]

महामारी हमें यह सिखाती है कि हम इस श्रृंखला में उतने ही कमजोर हैं जितने दुनिया के सबसे कमजोर लोग यानी हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हर किसी के पास सार्वजनिक स्वास्थ्य तक पहुँच हो, ताकि कोई भी इस वायरस का वाहक न बन सके। पानी के साथ भी ऐसा ही है। यदि लोगों के पास साफ पानी नहीं है तो वे बीमारी को फैलने से नहीं रोक पाएंगे।[4]

कोरोना वायरस से उपजे संकट ने मानव जीवन को गहरे घाव दिए हैं। स्वास्थ्य संकट, भय, निराशा, अनिष्ट की अशंका जैसी अनेक मानसिक समस्याएँ परिस्थितियाँ उभरी हुई हैं। कोरोना का प्रकोप इसलिए भी भयावह बना हुआ है कि हमने स्वयं को भुला दिया है। प्रकृति एंव पर्यावरण से हमारा जीवन कट गया है।

आज कोरोना महामारी के कारण इंसान की जीवन प्रणाली में परिवर्तन आ रहे हैं। अब तक जिस विचारधारा पर जीवन चल रहा था उसे किनारे रखकर नया रास्ता खोजना होगा। जीवन चिन्तन के उस मोड़ पर खड़ा है जहाँ एक समस्या खत्म नहीं होती, उससे पहले अनेक समस्याएँ एक साथ फन उठा लेती हैं।[5]

नीति आयोग की रिर्पोट कहती है कि भारत भीषण जल संकट से जुझ रहा है। यूँ तो जल उपलब्ध कराना हर सरकार की प्राथमिकता होती है लेकिन जिस प्रकार से लोग कोरोना से बचने के लिए हाथों को धो रहे हैं उससे लग रहा है कि जल संकट गहरा सकता है। इससे महामारी खत्म होने बाद जल संकट युद्ध का रूप ले सकता है।[6]

कोरोना वायरस के कारण दुनिया भर में साफ पानी से हाथ धोने और स्वच्छता बनाए रखने पर जोर दिया जा रहा है लेकिन जिस प्रकार संक्रमण से बचने के लिए हाथ धोना बेहद जरूरी है उसी प्रकार जल संरक्षण उससे भी ज्यादा जरूरी है।[7]

कुल मिलाकर कहने का अर्थ यह है कि जल–संरक्षण के लिए लोगों को सबसे पहले जल के प्रति अपनी सोच में बदलाव लाना आवश्यक है।[8]

शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता और संबंधित ढेरों समस्याओं को जानने के बावजुद देश की बड़ी आबादी जल संरक्षण के प्रति सचेत नहीं है। जहाँ लोगों को मुश्किल से पानी मिलता है वहाँ लोग जल की महत्ता को समझ रहे हैं लेकिन जिसे बिना किसी परेशानी के जल मिल रहा है वे ही बेपरवाह नजर आ रहे हैं।[9]

1992 में रियो डि जेनेरियो में आयोजित पर्यावरण तथा विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में विश्व जल दिवस की पहल की गई थी। इसके परिणामस्वरूप 1993 में 22 मार्च को पहली बार विश्व जल दिवस का आयोजन किया गया। इसके बाद हर वर्ष लोगों के बीच जल का महत्त्व, आवश्यकता और संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है।[10]

इस वर्ष (2021) जल दिवस का थीम 'पानी का महत्त्व' है। कितनी हैरत की बात है कि हमारा जीवन पानी पर टिका है लेकिन हम इसके संरक्षण की बहुत ज्यादा परवाह नहीं करते।[11]

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड–19 से बचने के लिए हाथ धोने को सबसे एहतियाती कदम बताया है। लेकिन दुनिया भर में लगभग 3 बिलियन लोगों को हाथ धोने की बुनियादी सुविधा तक की कमी है और 2.2 और 4.2 बिलियन लोगों को क्रमशः पानी और स्वच्छता सेवाओं की उपलब्धता नहीं है। ऐसे में जब पूरी दुनिया में कोरोना वायरस कहर बनकर भरा है, जलवायु परिवर्त्तन, पर्यावरण और स्वच्छ ऊर्जा के मुद्दों पर सार्वजनिक समझ और प्रवचन निर्माण पर केंद्रित एक दिल्ली स्थित कम्युनिकेशन स्ट्रेटजी संस्था क्लाइमेंट ट्रेंडस ने वैश्विक पैमाने पर जल की समस्या का विश्लेषण करते हुए एक फैक्ट शीट जारी करते हुए दुनिया भर की सरकारों से कोविड–19 के मद्देनजर पानी को लेकर लचीली नीतियाँ बनाने और बुनियादी ढांचे को विकसित करने का आग्रह किया है।[12]

हमें समय रहते जागना होगा और बारिश पानी के संरक्षण पर जोर देना होगा ताकि बेकार जाने वाले पानी को बचाकर भू–जल पर हम निर्भर कम हो।[13]

इसी तरह से कोरोना के वैश्विक महामारी के लिए हाथ धोना और नहाना जरूरी है। बस इतना ध्यान रखें कि नलों में पानी व्यर्थ नहीं बहे, क्योंकि कहते हैं 'जल है तो कल है।'

निष्कर्ष – हमारे देश का सामना बहुत जल्द अपने इतिहास के सबसे गंभीर जल–संकट से होने वाला है। कोरोना के वैश्विक महामारी के रूप में फैलने के बाद बार–बार हाथ धोने की सलाह जल की भारी मात्रा में अनियंत्रित बर्बादी को बढ़ावा दे रहा है। ऐसी स्थिति में सरकार और आम जनता दोनों के लिए चिंता का विषय

है। इस दिशा में अगर त्वरित कदम उठाते हुए सार्थक पहल की जाए तो स्थिति बहुत हद तक नियत्रंण में रखी जा सकती है। क्योंकि कोरोना से लड़ना भी है और पानी भी बचाना है।

संदर्भ सूची

1- https://www.thethirdpole.net, Mar 23, 2020
2- जल–चर्चा, जुलाई 2020, पृष्ठ – 10
3- अमर उजाला, 11 सितम्बर 2020
4- https://www.downtocarth.org.in 22 March 2020
5- प्रभा साक्षी, ललित गर्ग, जुलाई 20, 2020
6- www.m.hindi.indiawaterportal.org.
7- https.narbharattimes.mdiatimes.com 22 march 2021
8- द्विवेदी पीयुष, जनसत्ता, 22 मार्च 2016
9- https://blog:mygov.in
10- www.m.ptrika.com
11- पूवोक्त
12- https://www.hastakshep.com>relati...
13- अमर उजाला, 11 अप्रैल 2020

****